

Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 07:59

: 0000 0000 00 0000 0000000 0000000000 00 000 000000 : 00000000 00 000000000000
000000 000000000000 00 00000000, 00 00 0000000000 00 000000 : 00000 0000000000000000
00 00000000 0000 000000000 -00000000000 00 0000000000 00000 -00000 00 00000 000000
000000, 00 000000000 000000 00 : 00000 00 00000 00 000000000 -00 :



000000 000000



00000 : कससी भी शख् 00 स के जन्मि 00 दगी के रपोरट-करड क मूल् 00 यांक्न करना हो तो सबसे पहले उसके दोस् 00 तों के चेक करना चाहार् 00 लेक्नि दोस् 00 तों में सबसे पहले तो उसके पुराने दोस् 00 तों के चेक कयिा जाना चाहार् 00 वजह यह क ताजे-नवेले मत्िर के उसकी वर्तमान परस्थितियों के आधार पर जुड़ते-घटते ही रहते हैं 00 आज है, तो केई गारंटी नहीं क क्ल वे होंगे ही जरूर 00 मगर असल दोस् 00 त तो जन्मि 00 दगी हर सांस के तरह आपके हर क्षण मजबूत करता ही रहता है 00 जन्मि 00 दगी में उसकी भूमकि में लाभ-नुक्सान की भावना 00 केंसों-योजनों दूर होती है 00 मक्सद सरफि यह क अपने मत्िर के उर्जा देता ही रहे, हर कीमत पर 00

तो लब् 00 बोलुआब यह क अगर कससी के जन्मि 00 दगी में बचपन के सारे दोस् 00 त बनिा कससी लाग-लपेट के मौजूद दखि रहे हों, तो फरि तो मौजां ही मौजां 00 अजी, ऐसे में तो आप सरफि मौज कीजां 00 बेशकमान लीजां 00 क आप डसि्टक्वि शन नम् 00 बरों से जीत गये 00 अक् 00 वल नम् 00 बर से 00 सच कहूं, तो ऐसी बेमसाल जीत बहुत कम लोगों के ही नसीब होती है 00

बीती 20 फरवरी-2018 के हुई मेरी बटिया साशा सौवीर की शादी में तो यही सब हुआ था 00

Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 07:59

सन-11 में तय कर लिया था कि अब नौकरी नहीं करूंगा। "फिर अब तुम क्व या करोगे?" यह सवाल कई लोगों ने मुझ पर उछाला था, और उनके सवालों की झड़ी आज भी मुझे कीचड़-वर्षा सी महसूस होती है। लेकिन ऐसे सवाल मुझे इसलिये क्व ट नहीं देते कि उनके सवाल का मकसद मुझे प्रताड़ित करने लगने जैसा लगता है, बल्कि इसलिये कि शायद उन हैं मेरी क्षमताओं का आंकलन नहीं किया होता है। वे मेरे प्रतिस्क् नेह-प्रेम के अतिरिक्त मुझको लेकर भयभीत हो जाते हैं।

अरे नौकरी करने-छोड़ने के मामले में खासा हस्क् टरी-शीटर हूँ। सन-84 में जब सुब्रत राय के भाई जयब्रत राय के उसके आफिस में घुस कर अपने जूतों से रौंदा था, तब भी नौकरी गंवा गया था। उसके बाद सन-92 में दैनिक जागरण के सम्क् पादक वनिंद शुक् ला ने अपनी क्मीनगी का प्रदर्शन किया, तो मैं ने भी उसका वरिध किया। नतीजा यह हुआ कि मेरा तबादला बरेली कर दिया गया। मगर मैंने नौकरी करने के बजाय, जागरण के ही अलविदा कर दिया और जागरण के नौकरी के लात मार कर बेरोजगारी से आलगिनबद्ध हो गया था मैंने।



पूरे क्कीब दस बरस तक बेहद क्व ट में रहा, मगर समझौता नहीं किया।

हां, केवल वे मतिर ही है, जो हमेशा यही चाहते और करते रहे कि कैसे भी हो, कुमार सौवीर अपने कुमारसौवीरपना के प्रवाह में संतुलित-सुरक्क्षित और स्क् वस्क् थ चलते-बहते ही रहें। किसी ने मुझे आर्थिक मदद की, तो किसी ने हौसला। आज तक यही हो रहा है, कोई मुझे सहयोग कर रहा है, तो कोई दान-दक्क्षणा। जीवन का प्रवाह क्लक्त्त बहता ही जा रहा है। झरने पर उछल-कूद करते जल-बूंदों के छोटे-मोटे झुण्डों की तरह। क्वी फंस जाता हूँ, तो क्वी कुछ अरमान सूखने लगते हैं। क्वी इस पत्क् थर से अपना सरि फोड़ बैठा हूँ, तो क्वी अपनों का झुण्ड बना कर आनंदोत्क् सव मनाते हू। आगे बढ़ जाता हूँ।

सात बरस से बेरोजगारी। क्वी के भी वचिलित कर सकती है। अचक् छे-अचक् छों के हल्ला सकती है, चक्काचूर कर सकती है। दुनिया के विशालतम सबाना जंगल के जेब्रा या भैंसों पर शेरों की टोली के अचानक हमलों की तरह छनिक् न-भनिक् न जानवरों की तरह कुछ मतिर आपके संकट के दानों में धूल झाड़ते हू। रफू-चक्क् कर हो जाते हैं। सबसे आक्क्रमण होता है मतिरों के लेकर भावनात्क् मक धरातल पर। कुछ मतिर क्वक्क्ष हो जाते हैं, खास कर पुरूष-मतिर। वे चंद लोग मेरी जनिक् दगी में सरि पर पांव रख कर भाग नक्क्ले थे, तो उनका क्व या किया जा सकता है।

जबकि जक् यादातर महिला मतिर तो मुझ पर दयनीय भाव का प्रदर्शन करती है। चक् चक् चक् चक् चक् बेचारा, कैसे चलेगा तुम्हारा जीवन, समझ ही नहीं पाती हूँ। लेकिन क्वी मेरे लायक कोई जरूरत महसूस हो तो बताना जरूर। कुछ तो ऐसी है कि मोबाइल पर बातें तो घंटों तक बतियां गीं, कि हर बार में सैक्कों का बलि गरि जा, लेकिन बक् लाउज से बटुआ नहीं नक्क्लेंगी। वे चाहे इलाहाबाद वाली हों या फिर जौनपुर वाली, अथवा सोनभद्र, इलाहाबाद, वाराणसी, बाराबंकी, कनपुर, मुरादाबाद, आगरा, दलिक् ली, छपरा अथवा अमृतसर या जोधपुर वाली। हां, हल्क् क-फुल्क् क खरचा तो बायें हाथ की बात है।

Written by कुमार सौवीर
Friday, 23 March 2018 07:59

बस् स स इससे ज यादा नहीं

मगर ओहदा, ऐश वर्य, वैभव या धन-दौलत से मतिरता क मूल यांकन क या कया जा सकता है?

हरगजि नहीं

है न? (000000:)

मतिरता केसर्वोच्च मूल यों, आधारों और मजबूत पायदानों के छूने के केशशि करने जा रही है यह कहानी जहां कठनि आर्थिकजीवन शैली में घरे होने केबावजू जीवट वाले व यक्त, और सफलताओं से सराबोर कद्दावर शख्सयित की मतिरता क गजब संगम होता है यह जीती-जागती कहानी है, सच दास तान मेरी बेटी साशा सौवीर की शादी पूरे धूमधाम केसाथ सम् पन् न हो जाने की गाथा इसकी अगली क्कथियों के महसूस करने केला कृपया नम् न लकिपर क्लिककीजा गा:-

[0000 00000 00 0000 00 00000000](#)

